TURNITIN REPORT

वैश्वीकरण और भाषा

RESEARCH 50

Document Details

Submission ID

trn:oid:::3618:135837565

Submission Date

Apr 20, 2026, 12:57 PM GMT+5:30

Download Date

Apr 20, 2026, 1:00 PM GMT+5:30

File Name

वैश्वीकरण और भाषा.docx

File Size

27.9 KB

7 Pages

2,439 Words

10,266 Characters

1% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text
- Cited Text

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
1% Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
1% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1 Student papers

Liverpool John Moores University on 2026-04-07 **<1%**

2 Student papers

Fountainhead School on 2018-09-23 **<1%**

3 Student papers

STEKOM on 2026-04-10 **<1%**

4 Student papers

Ambedkar University Delhi on 2026-03-25 **<1%**

वैश्वीकरण एवं भाषा: एक मंथन

डॉ प्रियंका

असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा शास्त्र विभाग

आचार्य नरेंद्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय कानपुर।

भाषा एक ऐसा साधन है जिससे हम एक दूसरे के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं संवाद स्थापित करने के पश्चात हम विस्तार से व्यापार कर सकते हैं तथा एक दूसरे के नैतिक मूल्य और आचरण को समझ सकते हैं यदि हम वैश्विक स्तर पर संवाद कर सकते हैं तो यह संभावना बढ़ जाती है कि हम वैश्विक परस्पर सहयोग भी कर सकते हैं। वैश्विक भाषाओं के उपयोग से विभिन्न संस्कृतियों का समागम संभव है उदाहरण अंग्रेजी वैश्वीकरण की भाषा है यदि तकनीकी को भी हम वैश्वीकरण की भाषा कहें तो यह गलत नहीं होगा क्योंकि तकनीकी ने दुनिया को एक छोटे से गांव में बदल दिया है।

वैश्वीकरण और भाषा में घनिष्ठ संबंध है वैश्वीकरण के माध्यम से हम विभिन्न भाषाओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं तथा दूसरा पक्ष यह भी है कि हम वैश्विक भाषाओं के माध्यम से वैश्वीकरण का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम किसी भी एक वैश्विक भाषा का ज्ञान रखते हैं तो हमारी सफलता चाहे वह ज्ञान विज्ञान की खोज, व्यापार ,खेलकूद, साहित्य ,कला कोई भी क्षेत्र हो हमारे सफलता का प्रतिशत गुणात्मक रूप से अत्यधिक बढ़ जाता है। हम अपनी प्रतिभा, समर्थ तथा साक्षमता को विश्व के धरातल पर सुगमता व सफलतापूर्वक प्रदर्शित कर सकते हैं।

वैश्वीकरण और भाषा का संबंध जानने से पहले यह आवश्यक है कि हम वैश्वीकरण के अर्थ व प्रक्रिया को समझ लें। वैश्वीकरण अर्थात यह वह प्रक्रिया है जो किसी राष्ट्र की सीमाओं से परे अर्थव्यवस्था, संस्कृतियों ,विचारों के बढ़ते अंतर संबंधों के एकीकरण को संदर्भित करता है यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहां विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं ,संस्कृतियों ,रीति रिवाज ,भाषा ,विचार एक दूसरे से संबंधित हो जाते हैं तथा वस्तुओं सेवाओं सूचनाओं का अधिक स्वतंत्रता से साझा करते हैं संक्षिप्त शब्दों में यदि वैश्वीकरण को समझ तो इसने विश्व को इतना छोटा बना दिया है कि कोई भी वस्तु सेवा या आवश्यक सामग्री

प्रत्येक व्यक्ति के पहुंच में आ गई है अब उसे कोलकाता की प्रसिद्ध साड़ी, फिरोजाबाद की चूड़ियों के लिए वहां जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि वैश्वीकरण के कारण वह अपने स्थान पर ही संबंधित वस्तु प्राप्त कर सकता है वैश्वीकरण अर्थात विश्व में आपस में वस्तुओं और विचारों व संस्कृति का आदान-प्रदान कर प्रदान करना जिससे वह सभी एक दूसरे के साथ एकीकृत हो सके। उपभोक्ताओं को संभावित रूप से कम कीमतों पर उत्पादों और सेवाओं की व्यापक विविधता तक पहुंचे हो जाती है उनके पास विक्रयों की अधिकता भी हो जाती है। वैश्वीकरण के माध्यम से आर्थिक संभावनाओं में बढ़ोतरी हुई है। वैश्वीकरण के कारण करियर में विकास के अवसरों में बढ़ोतरी हुई है।

वैश्वीकरण से हम निम्नलिखित लाभ प्राप्त कर सकते हैं

2 इस प्रक्रिया के द्वारा हम अपना बौद्धिक विकास कर सकते हैं क्योंकि वैश्वीकरण के माध्यम से हमें विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आने का बेहतर अवसर मिलता है। जिससे हमारे भीतर एक समक्ष व शिष्ट की भावना का संचार होता है वैश्वीकरण एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के वातावरण को विकसित करती है इस प्रक्रिया में सीमाओं का कोई बंधन न होने के कारण हम अन्य देशों के तकनीकी विकास व वाहन की वैज्ञानिक प्रगति को देखना प्रेरणा पद वातावरण का निर्माण होता है जिससे सभी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा व सहयोग तकनीकी को बढ़ावा मिलता है वैश्वीकरण की प्रक्रिया से हम अपनी शिक्षा व्यवस्था को और अधिक नवीन प्रगतिशील नवाचारों व तकनीकियों से सशक्त बना सकते हैं ।जब हम स्वयं की संस्कृति, रीति- रिवाज ,परंपराओं व मूल्य आदर्श के साथ अन्य देशों की संस्कृति व वाहन के रीति-रिवाज को जानते हैं समझते हैं वह उनका मूल्यांकन करते हैं तो हम बहुत सी नवीन संकल्पनाओं को सिखाते हैं तथा आवश्यकता अनुसार उन्हें प्रयोग भी कर सकते हैं और शैक्षिक क्षेत्र में नवीन अवधारणाएं हमारे मानसिक विकास को और अधिक सुदन बनाती हैं।

वैश्वीकरण के कारण इंटरनेट और अन्य प्रौद्योगिकियों विश्व भर में संचार और
3 सूचना साझा करने की सुविधा प्रदान करती है। वैश्वीकरण ने प्रौद्योगिकी के प्रसार को भी बढ़ावा दिया है। विभिन्न देशों के बीच प्रौद्योगिकी और ज्ञान का आदान-प्रदान होने से नवाचार और उत्पादक करता में वृद्धि होती है। वैश्वीकरण से उपभोक्ताओं को और अधिक विकल्प और कम कीमत को लाभ प्राप्त होता है सीमाओं की पाबंदी न होने से अधिक विकल्प चाहे वह वस्तु के हो सेवाओं के हो वह उपभोक्ताओं को प्राप्त होते हैं साथ ही उन्हें

नवीन अवसर और विकल्प प्राप्त होते हैं जो कि वैश्वीकरण के पहले संभव नहीं था ।अधिक विकल्पों के साथ ही उन्हें यह कम कीमत पर भी उपलब्ध हो पाते हैं ।वैश्वीकरण ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग में भी वृद्धि की है वर्तमान समय में विभिन्न ज्वलंत मुद्दों (गरीबी, जलवायु प्रदूषण, आतंकवाद ,ग्लोबल वार्मिंग) पर संपूर्ण विश्व एक साथ एक मंच पर आगे आया है। सभी अपने स्तर व साधनों से इन विश्व व्यापी समस्याओं को दूर करने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

बहुत ही आश्चर्यचकित बात है कि कुछ समस्याओं ने भी विश्व के देशों में आपस में भाईचारा, सौहार्द्ध व सहयोग की भावना का उदय किया है और यह मात्र वैश्वीकरण के कारण ही संभव हो पाया है। वैश्वीकरण ने जहां एक और वैज्ञानिक प्रगति व विकास किया है वहीं दूसरी ओर पूरी मानव जाति को भी विभिन्न समस्याओं से सुलझाने के लिए एकता के सूत्र में भी बांध दिया है। वैश्वीकरण का यह सकारात्मक पक्ष ही है कि इस विविधता से भरे हुए विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध दिया है। वैश्वीकरण ने न केवल भाषा से संबंध रखा है बल्कि विभिन्न संप्रत्यय उदाहरण अर्थव्यवस्था ,सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश ,आतंकवाद, भौगोलिक स्थिति, भौगोलिक स्थितियां आदि सभी से अंतर क्रिया करता है। आज वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व वैश्वीकरण के कारण एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण और भाषा का घनिष्ठ संबंध है जहां एक और वैश्वीकरण के द्वारा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संबंधों में एकीकरण बढ़ रहा है वही भाषा इस एकीकरण बढ़ोतरी में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है आज हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी वैश्विक स्तर के सम्मेलनों में जाते हैं जो की हिंदी भाषा के लिए गर्व की बात है ।

वैश्वीकरण और भाषा में संबंध

हम यहां भाषा और वैश्वीकरण के संबंधों की बात कर रहे हैं। भाषा चाहे हिंदी हो या अंग्रेजी वैश्विक स्तर पर अपनी बात रखने विभिन्न विचारों का आदान-प्रदान करने वह सांस्कृतिक व सामाजिक एकीकरण के लिए आवश्यक होती है। यह सत्य है कि आज अंग्रेजी विश्व स्तरीय भाषा बन चुकी है यदि आप इस भाषा में पारंगत हैं तो आपके विकास में अधिकतम वृद्धि हो सकती है क्योंकि स्वयं के विचारों को, संस्कृति को ,मान्यताओं को ,परंपराओं व आदर्शों और मूल्यों को अन्य व्यक्तियों से साझा करना व उनके विचारों को समझना तभी संभव है जब हम एक विश्व स्तरीय भाषा का प्रयोग करेंगे जो कि दोनों पक्षों

के संप्रेषण से वार्तालाप को सफल बनाएंगे ।वैश्विक भाषाओं के माध्यम से हम स्वयं के व्यक्तित्व रुचियां, अनुभवों ,अपनी कल्पनाओं ,योजनाओं आदि से सामने वाले पक्ष को रूबरू करा सकते हैं। वैश्वीकरण और भाषा का घनिष्ठ संबंध है। वैश्विक भाषाओं के ज्ञान के अभाव में हम वैश्वीकरण का लाभ प्राप्त करने से वंचित रह सकते हैं। इसके अभाव में न केवल हमारा आर्थिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक लाभ भी प्रभावित होता है। जब तक दो पक्षों में संप्रेषण प्रक्रिया पूर्ण नहीं होती है तब तक विचारों का आदान-प्रदान सफल रूप से पूर्ण नहीं हो पता है। संप्रेषण प्रक्रिया पूर्ण होने के लिए यह आवश्यक है की संप्रेषण वैश्विक स्तर पर वैश्विक भाषा का प्रयोग किया जाए।

वैश्वीकरण और भाषा के संबंधों को हम निम्न बिंदुओं द्वारा समझ सकते हैं -

- वैश्वीकरण और भाषा का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध है। वैश्वीकरण के कारण आज हम एक नहीं कई भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। वर्तमान में हम न केवल हिंदी अंग्रेजी तक सीमित है बल्कि हमें फ्रेंच जापानी व चीनी भाषा को सीखने का अवसर भी प्राप्त हो रहा है। जिससे हमारा बौद्धिक विकास सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है और हमारा बौद्धिक विकास देश की प्रगति में सहायक है। वैश्वीकरण के कारण विभिन्न भाषाओं के शब्द और वाक्य एक दूसरे में शामिल हो रहे हैं ।वैश्वीकरण भाषा का अर्थ है भाषा का वैश्वीकरण इस संकल्पना में भाषण एक वैश्वीकरण दुनिया में परस्पर क्रिया करती हैं और अनुकूलन करती हैं।
- वैश्वीकरण से विश्व के विभिन्न भागों के लोगों और संस्कृतियों के बीच आधिकारिक संपर्क बढ़ता है। इस बड़ी हुई अंतर क्रिया से भाषाओं का प्रसार हो सकता है क्योंकि
1 व्यक्तियों को एक दूसरे से विचार साझा करने और एक दूसरे को समझने की
1 1 आवश्यकता होती है। भाषा वैश्वीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है इसी के
1 माध्यम से संप्रेषण की प्रक्रिया भी पूर्ण होती है
- वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का आदान-प्रदान बड़ा है जिससे एक भाषा के वाक्य और शब्द दूसरी भाषा में शामिल हो रहे हैं। उदाहरण कैसे फ्रेंच या सालसा(स्पेनिश)जैसे शब्द अंग्रेजी में उपयोग किए जाते हैं।
- वैश्वीकरण ने तकनीकी विकास में भी बढ़ोतरी की है। नवीन तकनीकी विश्व भर की विभिन्न भाषाओं के प्रसार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उदाहरण ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने भाषण को बढ़ावा देने और उन्हें दुनिया भर के लोगों तक पहुंचाने के लिए नवीन उपाय प्रदान किए हैं वर्तमान में हम विश्व

की किसी भी भाषा को जानने, सीखने व समझने के लिए स्वतंत्र हैं। हमारे पास विभिन्न माध्यमों की उपलब्धता है जो की मात्रा वैश्वीकरण के कारण ही संभव हो पाया है ।जिसके माध्यम से कोई भी भाषा सीखना या समझना व्यक्ति की पहुंच से दूर नहीं है।

- भाषा किसी व्यक्ति की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि वर्तमान योग वैश्वीकरण का योग है तो भाषाओं का वर्चस्व स्थापित हो चुका है जिसके कारण किसी भाषा को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अधिक संघर्ष करने के लिए प्रयासरत रहना पड़ रहा है। यह स्थिति वैश्वीकरण के कारण ही है।
- यद्यपि वैश्वीकरण और भाषा का सकारात्मक संबंध है किंतु विडंबना यह भी है कि वैश्वीकरण के कारण कुछ भाषा विशेष रूप से स्थानीय भाषाओं के विलुप्त होने का खतरा भी पैदा हुआ है। भाषा विविधता को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए भाषा के बीच संतुलन बनाना और सक्रिय कदम उठाना आवश्यक है।
- यूं तो वैश्वीकरण व भाषा में जटिल संबंध है क्योंकि वैश्वीकरण भाषाओं के लिए अवसर और खतरा दोनों ही परिस्थितियों सुरजीत करता है। इस स्थिति को दूर करने या परिस्थितियों में संतुलन रखने के लिए सक्रिय प्रगतिशील कदम उठाने की आवश्यकता है। सृष्टि के सृजन काल से ही भाषा मानव के साथ संबंध स्थापित कर रही है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव गूंगा है। भाषा के महत्व को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है बिना भाषा के इस विश्व मानवता का संचालन एक स्वप्न सा है ।

वर्तमान समय में भाषा के संदर्भ में वैश्वीकरण का महत्व

वर्तमान समय में भाषा के उत्थान व प्रकार और प्रसार के लिए वैश्वीकरण काफी सीमा तक उत्तरदाई है। बिना वैश्वीकरण की प्रक्रिया की भाषा का वर्चस्व मात्रा स्थानीय व देश तक ही सीमित रह सकता है वह अंतरराष्ट्रीय भाषा की रूप में अपना प्रादुर्भाव करने में सफल नहीं हो पाती है। निम्न बिंदुओं से हम समझ सकते हैं कि वर्तमान में वैश्वीकरण एक भाषा के उत्थान के लिए क्यों आवश्यक है

- वैश्वीकरण की सहायता से विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान बढ़ावा दिया जाता है जिससे भाषाओं का भी आदान-प्रदान हुआ है।
- वैश्वीकरण के कारण ही हमारी भाषाओं को पहचान प्राप्त हुई है और साथ ही व्यक्ति अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति अधिक जागरूक हुए हैं।
- वैश्वीकरण के कारण ही व्यक्ति अपनी भाषा को संरक्षित करने वह बढ़ावा देने के लिए उत्सुक है ।
- वैश्वीकरण ने हिंदी भाषा के उपयोग को न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी बढ़ाया है ।
- वैश्वीकरण का महत्व भाषा के संदर्भ में इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता से अनुवाद प्रक्रिया में वृद्धि हुई है। विश्व की भाषाएं परस्पर निकट आ चुकी हैं। सभी भाषाएं अपने भाषा और साहित्य को समृद्ध करने के लिए अनुवाद का अवलंब प्रयोग कर रही है। इसके फल स्वरुप विश्व की उत्तम रचनाएं सभी को वह अन्य भाषा वीडियो को पढ़ने को मिल रही हैं। जिससे हमारी संवेदनाओं व अभिव्यक्तियों की भाव भंगिमा का विस्तार हो रहा है हम अपनी भाषा के साहित्य व उपन्यास के साथ अन्य भाषाओं की रचनाओं को भी पढ़ व समझ सकते हैं।
- यह तो सर्व विदित है कि वैश्वीकरण का भाषा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है किंतु यह भी चिंतन का विषय है या यूं कहे की डर है कि वैश्वीकरण के कारण कुछ नवीन शब्द हमारी भाषा में आ रहे हैं तो कहीं हमारी भाषा के मूल स्वरूप में परिवर्तन ना हो जाए यूं तो इस डर का प्रतिशत कम ही है क्योंकि अधिक बार इसे भाषा समृद्ध होती है।
- वैश्वीकरण के माध्यम से व्यापार, अर्थव्यवस्था आदि का दायरा भी बड़ा है और व्यापार की सीमा बढ़ोतरी में कहीं ना कहीं भाषा का भी हाथ है ।व्यक्ति अपनी नई नीति, नवीन अर्थ दृष्टि व नवीन उपभोक्ता जीवन शैली को विकसित करने के लिए वैश्विक भाषाओं को औजार के रूप में प्रयोग कर रहा है ।जहां भाषा वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम बन रही है वहीं औद्योगिक व व्यापार में भी अपना अभूतपुर योगदान दे रहे हैं यह वैश्वीकरण द्वारा ही संभव है।
- वैश्वीकरण के इस दौर में भाषाओं में प्रतिस्पर्धा का भी आलम है उन्हें भी अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए विशेष कर कुछ स्थानीय भाषाओं को कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है । अंत में यह कह सकते हैं कि वैश्वीकरण भाषा

विकास को स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है। सभी भाषाओं के लिए वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने के समान अवसर उपलब्ध हैं अपितु आवश्यकता पड़ने पर उचित प्रयास भी किए जाने चाहिए।

4

- भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी पहचान और संस्कृति का भी हिस्सा है। वैश्वीकरण के दौर में यह सवाल उठता है कि क्या हम अपनी भाषाई पहचान को बनाए रख पा रहे हैं? या हम धीरे-धीरे एकरूपता की ओर बढ़ रहे हैं ।

वैश्वीकरण और भाषा का संबंध बहुआयामी है। यह अवसरों और चुनौतियों दोनों को साथ लेकर चलता है। आवश्यक है कि हम वैश्विक भाषाओं को अपनाते हुए अपनी मातृभाषाओं और स्थानीय भाषाओं का संरक्षण भी करें। संतुलन ही इस मंथन का सही समाधान है—जहाँ विकास भी हो और पहचान भी बनी रहे।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ वर्मा ,विमलेश ,आलेख “अपनी माटी” ,साहित्य पत्रिका दिसंबर 2013 वैश्वीकरण और हिंदी प्रसार व प्रवाह http:// WWW/ apnimati. Com/ 2013
2. यादव ,वीरेंद्र सिंह, वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की विकास प्रक्रिया ,रचनाकारी पत्रिका ।
3. गुप्ता ,रामबाबू ,भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्याएं, आगरा रतन प्रकाशन मंदिर ।
4. गुप्ता ,एसपी तथा अलका गुप्ता ,2008 ,भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं ,आगरा शारदा पुस्तक भवन।
5. अय्यर ,बैद्यनाथ आरबी ,भारत में शैक्षिक नियोजन और प्रशासन: अतीत और भविष्य।
6. मिश्रा, गिरीश एवं पांडे, 2005, भूमंडलीकरण: अभिधा प्रशासन, मुजफ्फरनगर।